।। होतब को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

✻

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुई,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ होतब को अंग लिखंते ||

|| सवईया इंद व छंद ||

होणे की बात अहोणी नही होणी || लाख ऊपाय करो नर आई ||
नारद मूनि जोगेश्वर पूरा || तिन का भेव बताऊं लाई ||
घड़ी सो पोहोर पलक न ठाड़ || भ्रमत जुग सो जाय बिलाई ||
यूं होणे की बात क्हे सुखदेवजी || टारी टरे न किणा सूंई भांई || १ ||

होतब यानी होनहार यानी भविष्य मे जैसा होना होगा वैसी ही बात होती है । न होने की बात कभी भी नही होगी लाख उपाय किए तो भी न होने की बात पूरी नही होगी । देखो –नारद मुनी पूरा योगेश्वर है । मै नारद का भेद लाकर तुम्हे बताता हूँ । वह नारद मुनी एक घड़ीभर, एक प्रहरभर तो क्या,एक पलभर भी कही भी खड़ा नही रह सकता है । रात–दिन त्रिलोकी मे घूमते ही रहता है । हम एक दिनभर भी चले तो, शाम को थक जाते है फिर यह नारद मुनी रात–दिन चलते रहता है तो थकता नही होगा क्या? उस रात–दिन फिरते रहनेवाले का क्या होता होगा । उसके कष्ट की कल्पना कर लो । इस तरह से नारद मुनी को भ्रमण करते–करते,युगों के युग व्यतीत हो गये । हम एक दिन चलते है तो थक जाते है परन्तु नारद मुनी रात–दिन चलते रहता है । नारद दक्ष राजा के श्राप से एक जगह खड़ा नही रह सकता है । ऐसी यह होनी की बात सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि किसी के भी टालने से टलती नही है । ||१||

सूरज देवत पे सब सारे || आप तो भाग कासीद लीखाई ||
चंद्र जो देव निर्मळ अेस || धोती को दाग लग्यो तन माई ||
समंदर नाम सायर सो मोटा || खारो सो नीर पीवे नही कोई ||
युं होणे की बात क्हे सुखदेवजी || टारी टरे नही कीणासूं लोई || २ ||

सुर्य को लोग सुर्यदेव कहते है । वह सारे जगत पर तपते रहता है परन्तु स्वयं सुर्य रात–दिन फिरता ही रहता है और यह चन्द्र ऐसा निर्मल देव है । ऐसे निर्मल चन्द्रमा के उपर, गौतम की धोती का दाग लगा ऐसा कहते है । यह तो होनी की बात है । यह समुद्र जो है । वह अती विशाल है,उसे सागर कहते है परन्तु होनी के चलते उसका पानी खारा हो गया । उसके खारे पानी को कोई भी पीता नही है तो ऐसी होनी की बात,किसी के भी टालने से टलती नही है । || २ ||

शिव तो राज देवे धन पुतर || आप तो अंग के खाख लगावे ||
आक धतूरा भांगज पीवे || जुगे जुग डेरूँ सो जोय बजावे ||
बिस्नु ले अवतार ग्रभ मे || मानव देहे सूं आण धराई ||
यूं होणे की बात कहे सुखदेवजी || टारी टरे नही ब्होत सराई || ३ ||

शिव यह दूसरो को तो राज्य देता है,धन देता है व पुत्र देता है और खुद स्वयं तो अपने

शरीर को राख लगाता है । और आक(मदार)और धतूर और भांग ऐसे-ऐसे जहर पीता है और डमरू बजाता है और जो विष्णू है वह औतार लेता है व कौशल्या,देवकी,रेणुका आदी के गर्भ मे आकर मनुष्य देह धारण करता है । ऐसे होनी की बात किसी के भी टालने से टलती नही है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३ ।।

अब सीता को हरण पिताजी को मरणो ।। राम उचत हुवा मन माही ।।
जांजुळी रीष समाद अंदेसो ।। ऊठ तुळा प्रेतूं पुछ न जाही ।।
लव सो कूस भयो जब भारत ।। च्यारूं ही गारथ सो सुन होई ।।
युं होणे की बात कहे सुखदेवजी ।। टारी टरे न कीणी से आई ।। ४ ।।

अब इन अवतारो पर भी कैसे कैसे संकट पड़े इधर सीता का हरण हुआ और दूसरी तरफ पिता की मृत्यु और वन के कष्ट,(रहने के लिए जगह नही,कपड़े की जगह वृक्षो की छाल और राक्षसो का डर),जिससे राम वन मे उदास हो गया । जांजुली ऋषी के मन मे समाधी की शंका आयी तो वह उठकर तुलाधारा को पूछने गया और रामचन्द्र से लव और कुश का युद्ध हुआ । तो राम,लक्ष्मण,भरत,शत्रुघ्न ये चारो गारद हो गये । यह तो होनी की बात है । ऐसे सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है ।।।४।।

होणे की बात अहोणी नही होणी ।। लाख ऊपाव करो नर आणी ।।
जनम्या जबे तो गीत न गाया ।। म्रत्यू भई सुण रण मे प्राणी ।।
सेंस फुणा धर सेंस कुवावे ।। नाक मे नाथ सो आण पेराई ।।
युं होणे की बात कहे सुखदेवजी ।। टाळी टळे नई किणा सुंई भाई ।। ५ ।।

जो होने की बात है । वही होगी । न होने की बात कभी भी नही होगी । लाख उपाय करो,तो भी । जब कृष्ण का जन्म हुआ,तब कोई भी रंग-राग करके जन्मोत्सव नही किया । (क्योंकि उसके माँ-बाप,वसुदेव-देवकी कंस की कैद में थे । इसलिए कृष्ण का जब जन्म हुआ,तो उस दिन कुछ भी उत्सव नही किया गया । अभी कृष्ण जन्माष्टमी को हर गाँव में,हर मंदिर में,एक गाँव में दस मंदिर रहे,तो इन दसों मंदिरों में झूठा उत्सव करते है । परन्तु सच में जब कृष्ण ने जन्म लिया,उस दिन कोई जन्मोत्सव नही हुआ ।) और कृष्ण की मृत्यु प्रभास क्षेत्र के युद्ध भूमी में भील के बाण से हुआ । वहाँ कृष्ण का अन्तीम संस्कार करने वाला कोई नही रहा । ऐसे कालिया सर्प को शेषनाग के जैसे हजार फन थे ऐसा कहते है । उस हजार फनों की नाक में नथ डालकर,कालिया के सिरपर कृष्ण नाच किया,ऐसा कहते है । यह तो होनी की बात किसी से भी टालने से टलती नही है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ५ ।।

पांडव पांच सती जन सूरा ।। हेमाळे जाय गळावण लागा ।।
राम लछमण राम कुवावत ।। राकस बांध पताळा भागा ।।
पाड़ कूं ताक चल्यो हणू सूरो ।। पाव मे तीर लग्यो तब जोरे ।।

युं होणे की बात कहे सुखदेवजी ।। तीन त्रिलोकी मे मोड़ी न मोरे ।। ६ ।।

पाँचो पाण्डव सती थे जन भक्त थे और शूरवीर थे इन्हे भी हिमालय मे जाकर गलना पड़ा । ऐसे ही रामचन्द्र को राक्षस अहिरावण और महिरावण बांधकर,पाताल में लेकर भाग गये यह तो होनहार की बात है और हनुमान(द्रोणागिरी)पर्वत को उठाकर जब जा रहा था तब ऐसे शुरवीर मारूती के पैरो में जोर से भरत का तीर लगा । यह तो होनहार की बात है,तीनों त्रिलोकी में किसी के भी मोड़ने से मुड़ती नही है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ६ ।।

मनोहर छंद ।।

सुणो सब ग्याणी ध्यानी अेसो कोण जाणीये । होण हार होत बस टारी हून टर हे ।
बडे बडे भूप सो तो बादस्या बखाण कहुं । देव दाणू राज ऋषि कसे कर मर हे ।।
सिंगी से सरस रिख तप ध्यान जो रहे । ताही के कसर तेज ईंद्र मेघ डर हे ।।
क्हे सुखराम यो तो होत बास जोर हे । रिषि जोगी देव सूई रती नाही टर हे ।। ७ ।।

सभी ज्ञानी और सभी ध्यानी सुनो । इस संसार में ऐसा किसको जाने,की जो होनहार और होनी को टाल देगा । होनहार किसी से भी टलती नही है । बड़े बड़े राजा(प्रयवर्त,जिसके रथ के चक्के से बने हुए गड्ढे,सात समुद्र है और पृथु तथा रावण जैसे बड़े बड़े राजा और बादशाह का(सुलेमान जैसे,कि जिसने त्रिलोकी के देव,पशु, पक्षी,जानवर,राक्षस सभी को वश में कर लिया था उनका मैं वर्णन करके बताता हूँ । दाऊद,मुसा,ईब्राहिम जैसे,देव(ब्रम्हा,विष्णु, महादेव के जैसे),दानव(कुबेर,भार्गव,कुम्भकर्ण, जालंधर,हिरण्याक्ष,हिरण्यकश्यप आदी) और राजर्षी (विश्वामित्र के जैसे दूसरी सृष्टी रचना करने की सामर्थ्यवाले ।) ऐसे ऐसे कसकर मर गये और श्रृंगी ऋषी के जैसा श्रेष्ठ ऋषी,उनकी तपश्या और ध्यान इतना जोरदार था,की भूख लगने पर सामने के वृक्ष को सिर्फ एक बार चाटते थे । उनके कड़क तेज से इन्द्र और मेघ भी डरते थे । ऐसा ऋषी,मेनका के फंदे में पड़ा । यह तो होनहार की बात जोरदार है । ऋषी, योगी,देव इनसे भी होतब की बात गुंजभर भी टाली नही गयी । ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ७ ।।

संभूसो श्राप जाय दुज सेती जाणीये ।। पुत्री संजोग भोग धुम रिष धारे हे ।।
राम से भ्रतार ताय हणू लछ पायक ।। रावण से आन ग्रेहे सीता बन हर हे ।।
क्हे सुखराम सो तो होतबस जोर हे ।। देहे धरी दुज केई बस नही कर हे ।। ८ ।।

महादेव को ब्राम्हण का सिर काटने के कारण ब्रम्ह हत्या लगी तथा ब्रम्हा ने महादेव को श्राप दिया,की तुम्हारी प्रसाद कोई नही खायेगा और महादेव ने ब्रम्हा को श्राप दिया कि तुम्हारी पूजा कोई नही करेगा । और धुम्र ऋषी(पराशर)ने अपनी पुत्री से संभोग करके भोग किया,यह भी तो होणहार की ही बात है और सीता(जानकी)जिसका राम जैसा

भ्रतार और लक्ष्मण के जैसा रक्षक होते हुए भी सीता को रावण वन सें पकड ले गया । यह भी होनी की ही बात है ,होनहार बहुत जोरदार रहती है । देह धारण करके आये हुए अवतार और द्विज(ब्रम्हा)के भी वश में यह होनी की बात नही है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।८।

मान से मछंद्र जोग ।। शिष ताही गोरखा ।।
ग्रेहे जाय बंधे गुर ।। जिण घर पोरखा ।।
नारद न्याव नेम तरण रूप पेखिये ।। साठ सुत जाये ताही ।।
होण हार देखिये ।। अंजनी अनोप ताही पहाड़ मध बास रे ।।
ग्रेहे गांव प्रीत बिना ।। बंधी सुत आस रे ।।
गोतम गंभीर रिष ।। ईंद्र बिध देखियो ।।
के सुखराम सो तो हुणहार सम जुग कछु नही पेखियो ।। ९ ।।

मच्छिन्द्र नाथ के जैसा योगी,जिसका गोरखनाथ जैसा शिष्य । ऐसा मच्छिन्द्रनाथ स्त्रीयों के राज्य में जाकर बँध गया । और स्त्री के घर अपना पुरूषार्थ खर्च किया । वहाँ से गोरखनाथ ने छुड़ा कर लाया । यह तो होनहार की बात । नारद मुनी न्याय से और नियम से चलने वाला,तरूण स्त्री का रूप हो गया । उस नारदी को साठ पुत्र हुए । यह होनहार की बात है । अंजनी यह अनुप,जिसे किसी की भी उपमा नही दी जा सकती ऐसे सुंदर थी । उसे उसके पिता गौतम ने तुम्हे कुमारी पन में ही पुत्र होगा ऐसा श्राप दिया था । इस श्राप से डरकर अंजनी जहाँ घर नही,गाँव नही और किसी पुरूष से प्रीती नही,ऐसे पहाड़ में रहने लगी वहाँ उसे मारूती पुत्र हुआ । यह भी होतब की बात है । गौतम जैसा गंभीर मन का ऋषी । इसने इन्द्र के द्वारा की गयी विधी देखी ।(इन्द्र को हजार भग हो गये । वही बाद में इन्द्र की हजार आँखे बन गये । अहिल्या पत्थर हो गयी । चन्द्रमा मुर्गा बना । उसे लंगोटी से पीटा और अहिल्या को शाप दिया । यह अहिल्या अहल राजा की पुत्री थी । यह बहुत रूपवान होने के कारण,इन्द्र वगैरे सभी देव उसको पाने की इच्छा करते थे परन्तु अहिल्या के पिता ने स्वयंवर रचा कि जो कोई पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके सर्व प्रथम आयेगा उसी को मैं अहिल्या दूँगा । इन्द्र वगैरे सभी देव पृथ्वी की प्रदक्षिणा देने के लिए निकले । गौतम पैरों से लंगड़ा था । वह गाय की प्रदक्षिणा करके,सबसे पहले आकर बैठ गया और सभी देव और इन्द्र सभी बाद में आये । और गौतम यह इन्द्र का गुरू था । तो भी इन्द्र कुवासना से,रात में गौतम के घर गया और गौतम को घर से बाहर भेजने के लिए चन्द्रमा को साथ में लिया । सुबह मुर्गे ने बाँग दिया,की गौतम गंगा स्नान करने के लिए जाता था । इसलिए इन्द्र ने चन्द्रमा को मुर्गा बनकर बाँग लगाने के लिए कहा तब गौतम रात थोड़ी सी रह गयी ऐसा समझकर स्नान करने गया । उसके जाने के बाद इन्द्र अहिल्या के पास गया । गौतम गंगा घाट पर गया तो गंगा ने कहा कि तुम आज

जल्दी क्यों आ गये । गौतम ने कहा कि मुर्गे ने बांग दिया यानी रात अब नही रही ऐसा समझकर आया । तब गंगा ने कहा कि तुम्हारे घर दगा हो रहा है तुम जल्दी घर जाओ । वह गौतम घर आकर इन्द्र की सारी विधी देखा । यह भी तो होनहार की ही बात है,होनहार के जैसा संसार में कुछ भी नही दिखाई देता ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। ९ ।।

ऊंच नीच बात सो तो हुण हार बस हे ।। मोही कूं कुजस जस बीच देर मारे हे ।।
मेरा कीया क्हाँ होय ।। मे तो बोत चाऊं ।। राज पाट सुखो धाम मोख मन धारे हे ।।
रत्तीसो रिजक बात मेरे बस नाय हे ।।करण हार जोग प्रभू आप ही प्रसिध्ध हो ।।
क्हे सुखराम सो तो ज्ञान कर देखिया ।ठाम ठाम जाग हरी सम राम आप हो ।१० ।

ऊँची बात और नीच बात,ये सभी होनहार के वश में है । मुझे तो बीच में ही यश और अपयश देकर मारते हो । जो होता है,वह तो होनहार के प्रमाण से होता है । मेरा किया हुआ होता तो,मैं तो बहुतसा राज्य चाहता हूँ ,राज सिंहासन चाहता हूँ और अच्छा धाम(स्थान)चाहता हूँ । और मोक्ष मिले,ऐसा मन में रखता हूँ । मेरे वश में तो रत्तीभर भी रिजक नही है और करने योग्य तो प्रभु आप ही प्रसिद्ध हो । मैंने सब ज्ञान करके देख लिया । सभी स्थान-स्थान पर और जगह-जगह पर सर्वत्र आप ही रमने वाले राम हो । ।। १० ।।

तुम ही क्रण हार ।। हुण हार सांइयां ।।मन का कियास कदे ।। होत नही कबहु ।।
ग्यान सो बिग्यान हम ।।सारे सोझ देखिया । क्रम सो बिंधुस भ्रम ।। भागा श्रब जब हु ।।
होण हार बात सोतो । पाली नही जाय हे ।जोग बिध चांवता सो ।होय हे बिजोग सोई ।
क्हे सुखराम प्रभू । तुम बिन क्रण हार । ओर बात बिध हम देखीयो न कोई ।।११।।

हे स्वामीजी आप ही तो करनेवाले हो । आप ही होनहार हो । फिर मेरा किया हुआ क्या होता है । मन का किया हुआ क्या होता है । मन का किया हुआ तो कभी भी नही होता है । मैंने ज्ञान और विज्ञान सभी शोधकर देख लिये । सभी कर्मो का विध्वंस होकर सभी भ्रम भाग जाते । परन्तु होनहार बात टाली नही जाती । मै जिस विधी का योग चाहता हूँ तो उस विधी का वियोग हो जाता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि प्रभुजी मैने आपके बिना करने वाली दूसरी बात और दूसरी विधी देखी नही । ।। ११ ।।

इन्द व छंद ।।

कोऊ क्हे सब राम करे हे ।। कोईस होण पदार्थ बोले ।।
कोउस जीव प्राप्त गावे ।। हात करीस सोई हर तोले ।।
राइ समेर नही कम जाफा ।। इसो प्रमाण अचकत बोले ।।
सोच बिचार कहे सुखदेवजी ।। ग्यानी हुवे सोई ओ भ्रम खोले ।। १२ ।।

कोई कहता है,सभी रामही करते है करने वाले रामही हैं । कोई कहता है होनहार जैसा

होगा वैसा ही होता है । कोई कहते है,जीव के कर्म के प्रमाण से,जीव को प्राप्त होता है । जैसे जीव ने हाथों से कर्म किया होगा,वही भाग्य में लिखे जाता है । वैसे ही हर उसे भाग्य के प्रमाण से तौलकर देता है । उसके देने में सुमेर पर्वत में,एक राई के दाने इतना भी कम अधिक नही होता है ऐसा प्रमाण पक्का बोलते है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि कोई ज्ञानी होगा वही यह भ्रम खोलेगा । ।।१२।।

कुन्डल्यो ।।

नर को हूंणो लिख्यो ।। सो मत आवे दाय ।।
प्रभाते नर ऊठ कर ।। वा ही करे उपाय ।।
वाही करे उपाय ।। प्रथ चूके नही काई ।।
होय पतंगो जीव ।। पडे. दीपक के माही ।।
जले गडे सुखरामके ।। प्रतन काची खाय ।।
ज्यूं नरको हूणो लिख्यो ।। सो मत आवे दाय ।। १३ ।।

जैसा मनुष्य के भाग्य में लिखा होगा वही बात उसे पसंद आयेगी । वह प्रभात में ही उठकर भाग्य मे लिखा है वैसा उपाय करेगा । उपाय करने प्रती कभी भी नही चूकेगा । जैसे पतंगा उठकर दीपक के उपर,गिरकर जल जाता है ऐसे ही जीव अपने कर्मो के प्रमाण से दु:ख मे पड़ते है । मनुष्य पतंगे की तरह जलते है और गलते है । मन में बिल्कुल कच्चे नही होते है । जैसा मनुष्य के भाग्य में लिखा होगा वही मती उसे पसंद पड़ेगी ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले । ।। १३ ।।

।। इति श्री होतब को अंग संपूरण ।।